शोध मंथन Vol. XIII No.III July-Sept. 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

भारत में विकास और पर्यावरण

प्राप्तिः 19.08.2022
स्वीकृतः 16.09.2022

67

डॉ० हरीश कुमार
एसोसिऐट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
एम०एम० (पी०जी०) कॉलेज, मोदीनगर
गाजियाबाद (उ०प्र०)
ईमेलः *kumarharish0430@gmail.com*

सारांश

पर्यावरण दो शब्दों 'परि' और 'आवरण' से मिलकर बना है जिनका शाब्दिक अर्थ 'परि' = चारों और 'आवरण' = घेरा है हमें चारों ओर से घेरने वाला पर्यावरण हैं लुई थॉमस ने अपनी पुस्तक The Lives of a Cell में धरती को एक जीवन्त सेल कहा है और उसके चारों ओर के वातवरण की उसकी रक्षा का एक परदा बताया है। यह रक्षा–कवच पर्यावरण है जो धरती की सतह के ऊपर हवा को रोके रखने में सहायता करता है। पर्यावरणीय ज्ञानकोश (1975) के अनुसार पर्यावरण उन सब परिस्थितियों और प्रभावों का कुल योग है जो जीवधारियों के जीवन और विकास को प्रभावित करते हैं। साधारण शब्दों में, जीवित प्राणियों के अस्तित्व, जीवन और पुनरूत्पादन को प्रभावित करने वाले सभी तत्व और कारक पर्यावरण कहलाते हैं। प्रकृति एक निश्चित नियमबद्धता से कार्य करती है। यदि उसके किसी अवयव या क्रिया के साथ छेड़खानी की जाये तो उसका सन्तुलन बिगड़ जाता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रयोग से बढ़ायी गयी मानव की उत्पादन–क्षमता ने पर्यावरण के प्रदूषण का संकट उत्पन्न किया है। पर्यावरण के विविध अंगों जल, स्थल, आकाश, वायु आदि में ऐसा परिवर्तन जो कि उपर्युक्त तत्वों के भौतिक, रासायनिक, जैविक गुणों में हानिकारक परिवर्तन कर दे, प्रदूषण कहा जाता है।

मुख्य बिन्दु

पर्यावरण ज्ञान कोश, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, उत्पादन क्षमता, प्रशासन की पारिस्थिति विज्ञान, हरित क्रान्ति।

वर्तमान समय में हमारी प्रमुख समस्या प्रदूषण है। विश्व में औद्योगिकरण और तकनीकी विकास के फलस्वरूप पर्यावरणीय प्रदूषण इतना बढ़ चुका है कि प्रकृति का सन्तुलन बिगड़ता जा रहा है। विश्व पर्यावरण एवं विकास आयोग की रिपोर्ट के अनुसार जीवाश्मिक ईंधन के दहन से वायुमण्डल में कार्बन–डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ रही है जो विश्व के तापमान को धीरे–धीरे बढ़ा रही हैं आगामी शताब्दी के आरम्भ में यह 'ग्रीन हाउस प्रभाव' विश्व के औसत तापमान को इतना बढ़ा सकता है कि हमें कृषि उत्पादन के क्षेत्र बदलने पड़ सकते हैं, समुद्री जल–स्तर बढ़कर तटीय नगरों में बाढ़ ला सकते हैं तथा राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था चरमरा सकती है। आयोग ने इन्हें विकास की

असफलताएं और मानवीय पर्यावरण के व्यवस्थापन की कमियां कहा हैं यह समस्या विकसित और विकासशील दोनों देशों के समक्ष है यद्यपि उसका स्तर और स्वरूप भिन्न हो सकता है। अतः विश्व के समस्त देशों में जनसाधारण अब पर्यावरण के प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों के तीव्र विनाश के प्रति चिन्तित हो गये हैं और पर्यावरण–संरक्षण के लिए जन–आन्दोलन विश्व स्तर पर देखे जा सकते हैं। आज प्रत्येक राष्ट्र में पर्यावरण के प्रति जागरूकता विकसित हुई और पर्यावरणीय नीतियों का निर्माण किया गया हैं।

भारत में पर्यावरण समस्या

अन्य देशों की भांति, भारत भी पर्यावरण से सम्बन्धित अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना कर रहा है जिससे लोगों का सामान्य जीवन प्रभावित हो रहा है। विकसित देशों की पर्यावरण समस्या उनके संसाधन के दुरूपयोग जीवन–शैली की देन है अर्थात् विकास की प्रक्रिया का ही दुष्परिणाम है, जबकि हमारी समस्या बढ़ती हुई जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संसाधनों पर बढ़ते दबाव का परिणाम है। भारत में बढ़ती हुई जनसंख्या न केवल पर्यावरण के लिए एक गम्भीर चुनौती है अपितु मानव के अस्तित्व के लिए खतरा भी है। भारत में बढ़ती हुई जनसंख्या और विभिन्न विकास योजनाओं ने पर्यावरण का संकट उत्पन्न किया है। चारागाह नष्ट हो रहे हें, जिससे चारा जुटाने का भार जंगलों और फिर खेती की जमीन पर आ गया है। इसके कारण पशुपालक उजड़ रहे हैं। एक तरफ भूखे पशु और उनकी गिरती जा रही नस्लें है और दूसरी तरफ पशुपालकों और किसानों में तनावपूर्ण सम्बन्ध बनते जा रह हैं। एक ओर देश में चारे और जलाऊ लकड़ी का संकट बढ़ता जा रहा है तो दूसरी और ओर सामाजिक वानिकी कार्यक्रमों में सफेदा जैसे पेड़ बड़े पैमाने पर उगाये जा रहे है जो न जलवायु जा सकते हैं और न पशुओं को लिखाये जा सकते हैं। वे धरती की नमी सोखकर उपजाऊ भूमि को और बंजर बना रहे हैं।

यहीं पर पर्यावरण विभाग द्वारा तैयार की गयी रिपोर्ट में कहा गया है कि पिछले दो दशकों में बालदी नदी के जल–ग्रहण क्षेत्र के खेतों की पैदावार 28 प्रतिशत तक गिरी है और इसी क्षेत्र के 18 गाँवों के जल संसाधनों में 50 प्रतिशत की कमी आयी है। इसके अतिरिक्त औद्योगिक इकाईयों से निकलने वाले अवशिष्ट द्रव्य भूमि में गुणात्मक परिवर्तन कर देते हैं और यह अनुप्रयोगी हो जाती है। अत्याधिक पेड़ों की कटाई से भू–रक्षण की समस्या उत्पन्न हुई है। तेज हवा, बाढ़ व वर्षा से भूमि का कटाव रोकने में वृक्षों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, उनके अभाव में भूमि की प्राकृतिक क्षमता और उर्वरता नष्ट हो जाती है। इस प्रकार भारत में पर्यावरण का संकट चारों ओर व्याप्त है। हमें देश की जनता के कल्याण के लिए पर्यावरण का संरक्षण और सुधार करना आवश्यक है। भूमि, वायु और जल जैसे प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग इस प्रकार करने की आवश्यकता है जिससे भविष्य की पीढ़ियां स्वस्थ पर्यावरण में सांस ले सकें।

विकास और पर्यावरण का अध्ययन निम्न दो शीर्षकों में करेंगे–

1. प्रशासन का पारिस्थिति विज्ञान,
2. पर्यावरण और विकास

1. प्रशासन की पारिस्थिति विज्ञान

विकासशील देशों के लिए विकास प्रशासन का विशेष महत्व है। इसका मुख्य उद्देश्य समाज में सामाजिक–आर्थिक विकास लाना है। वह एक मानवीय प्रक्रिया है जिस पर पर्यावरण का प्रभाव

रहता है। वास्तव में विकास प्रशासन तथा पर्यावरण का सम्बन्ध द्विपक्षीय है क्योंकि यह पर्यावरण से प्रभावित होता है। प्रो0 रिग्स ने प्रमुख रूप से प्रशासनिक व्यवस्था तथा उसके पर्यावरण का अध्ययन किया है। रिग्स का विचार है कि हर संस्था के आसपास सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक, आर्थिक वातावरण का अध्ययन किया जाना चाहिए जिससे जाना जा सके कि कोई विशेष प्रकार की संस्था कैसे कार्य करती है।

प्रशासन का सांस्कृतिक पर्यावरण

'संस्कृति' शब्द की उचित व्याख्या करना अत्यन्त कठिन है। फिर भी यह कहा जा सकता है कि संस्कृति का अर्थ किसी समुदाय की जीवनशैली है जिसमें उस समुदाय के रहन–सहन, खान–पान, पहनावा, जीवनशैली पर विशेष प्रभाव पड़ता है। एक समाज की संस्कृति अपने नागरिकों को अनेक आदर्शात्मक मूल्य प्रदान करती हैं भारतीय संसकृति की धारा कभी–कभी और कहीं–कहीं अवरूद्ध तो हुई किन्तु समय–समय पर भारतीय महापुरूषों ने उसे एकता के सूत्र में पिरो दिया। साथ ही आधुनिक स्वरूप प्रदान करके उसे शाश्वत बना दिया।

1. मानव–जीवन में धर्म का स्थान,
2. सम्प्रदाय,
3. सहिष्णुता अथवा धर्म–सद्भाव,
4. वसुधैव कुटुम्बकम

प्रशासन का सामाजिक पर्यावरण

एफ0 डब्ल्यू रिग्स ने अपनी पुस्तक "Ecology of Public Administration" में कहा है कि किसी समुदाय का सामाजिक परिवेश उसके संस्थानों, संस्थागत नमूनों, वर्ग, जाति–सम्बन्धों, ऐतिहासिक वसीयत, परम्पराओं, धर्म, मूल्यों की व्यवस्था, विश्वास, आदर्श आदि। भारतीय समाज की विशेषता यह है कि वह बहुलवादी समाज है, जिसमें विविध सम्प्रदायों के अनुयायी हैं, जिनकी विभिन्न भाषा, जाति–धर्म, रहन–सहन व वेशभूषा की अपनी–अपनी पद्धतियां है।

1. जाति, 2. धर्म एवं साम्प्रदायिकता, हिंसा

प्रशासन का राजनीतिक पर्यावरण

प्रशासन और राजनीतिक परिवेश का सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ठ होता है। दोनों ही एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं। लोक–प्रशासन की जड़ें राजनीति में निहित होती है। राजनीति का सम्बन्ध किसी देश के शासन से होता है और प्रशासन का क्रियात्मक रूप से प्रशासन में दिखता है। भारतीय राजनीतिक परिवेश के सम्बन्ध में यह बात ध्यान देने योग्य है कि भारत में शायद ही निरंकुश शासन रहा हो। राजा राज्य का सर्वोच्च शासक अवश्य होता था किन्तु वह मन्त्रियों की राय से कार्य करता था। यहां की सामाजिक व्यवस्था के अनुसार राजनीतिक समता की विचारधारा कभी नहीं पनपी। बौद्ध सम्प्रदाय के प्रभाव से कतिपय गणतंत्र स्थापित हुए थे।

1. भारत में प्रजातंत्र का स्वरूप,
2. शासन का प्रशासन में हस्तक्षेप,
3. शासकीय तथा प्रशासकीय तन्त्र में बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार,
4. शासकीय सेवाओं में आरक्षण,
5. धर्म और राजनीति का पृथक्करण।

प्रशासन का आर्थिक पर्यावरण

आधुनिक युग में आर्थिक विकास का अत्यन्त महत्व हो गया है। कुछ समय पहले तक राजनीतिक परिस्थितियों को ही अधिक महत्व दिया जाता था, परन्तु कुछ वर्षों से आर्थिक विकास के अनुसार ही नवीन इकाईयों का गठन किया जाता है। सत्य तो यह है कि पुरातन भारत में भी

अर्थव्यवस्था को काफी महत्व दिया जाता था। किन्तु यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि अर्थ केवल जीवन के एक ही पहलू पर केन्द्रित था। भारत की सनातन संस्कृति में मोक्ष को सर्वोपरि माना जाता था और अर्थ को गौण समझा जाता था। स्मरणीय है कि 19वीं शताब्दी में इस 'अर्थ' को ''राजकीय अर्थशास्त्र'' के रूप में प्रयोग किया जाता था। आज के समय में राजनीतिक और मामले परस्पर इतने गुंथे हुए हैं कि राजकीय अर्थशास्त्र का प्रयोग ही समीचीन जान पड़ता है। अतः आर्थिक वातावरण तथा लोक प्रशासन दोनों एक–दूसरे के साथ क्रिया–प्रतिक्रिया करते हैं तथा एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं।

1. प्रशासन का आर्थिक सहयोग में विकास,
2. आर्थिक व्यवहार का प्रशासन पर प्रभाव,
3. लोक–प्रशासन अनेक प्रकार से देश के जीवन को नियन्त्रित करता,
4. वित्त को प्रशासन का जीवन–रक्त,
5. प्रशासन में भ्रष्टाचार का मूल आधार आर्थिक भारतीय प्रशासन और संवैधानिक पर्यावरण

किसी भी देश का प्रशासन संवैधानिक व्यवस्था के अनुरूप ही जाता है। जहां संविधान का शासन है वहां प्रशासन का स्रोत भी संविधान ही होता है। इस प्रकार संविधान प्रशासन को आधार प्रदान करता है। हमारे प्रशासन पर संविधान का स्पष्ट प्रभाव दिखायी देता है। यहां यह ध्यान रखना आवश्यक है कि प्रत्येक सजीव और सबल संविधान के पीछे एक दर्शन होता है, एक आत्मा होती है, कुछ आस्थाएं, आधारभूत मूल्य अथवा सिद्धान्त होते हैं। इन सबकी नींव पर ही राजनीतिक–सामाजिक व्यवस्था का महल खड़ा किया जाता है और राज्य के विभिन्न अंशों का शरीर–गठन किया जाता हैं भारतीय संविधान के मूल सिद्धान्त किन्हीं वादों और गतानुगतिक सूत्रों की सीमाओं में नहीं बंधे हैं। वे अनिवार्यतः व्यावहारोपयोगी हैं। संविधान बिना किसी प्रकार के भेदभाव के देश में रहने वाले सभी लोगों की साधारण जनहित की भावना से अनुप्राणित है। भारतीय संविधान देश में लोक–कल्याणकारी राज्य की स्थापना करता है। अतः देश का प्रशासन भी जनसेवक तथा जनहितकारी है।

उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि देश विशेष की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, संवैधानिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों प्रशासन को न केवल प्रभावित करती है अपितु उसकी कार्य–प्रणाली एवं ढांचे को नया रूप प्रदान करती हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि प्रशासन और वातावरण में घनिष्ठ सम्बन्ध है। प्रो0 रिग्स के अनुसार, किसी भी प्रशासनिक नमूने का महत्व उसकी स्थिति के अन्तर्गत होता है। संक्षेप में यह कहा जात सकता है कि किसी भी समाज में राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, संवैधानिक एवं सांस्कृतिक घटनाओं की प्रशासनिक व्यवस्था के साथ उसी प्रकार परस्पर क्रिया करती हैं तथा उनको प्रभावित करती हैं और उनसे प्रभावित होती हैं।

2. पर्यावरण और विकास

पर्यावरण और विकास का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है किन्तु यह सम्बन्ध आज का नहीं है। प्राचीन समय में भी इन दोनों का सम्बन्ध था और प्लेटो वातावरण के महत्व के प्रति सजग था और उसने इस सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किये थे। वैसे लोक–प्रशासन में पर्यावरण के अध्ययन का विचार वस्तुतः वनस्पति विज्ञान से ग्रहण किया गया है। जिस प्रकार एक पौधे के लिए उपयुक्त जलवायु, प्रकाश तथा बाहरी वातावरण आवश्यक है उसी प्रकार एक सामाजिक संस्था के विकास के लिए वातावरण आवश्यक है। मार्क्स के समय से ही यह माना जाता रहा है कि व्यक्ति, समाज एवं

प्रशासन के समस्त क्रियाकलापों का स्वरूप उसकी बाहरी परिस्थितियों द्वारा निर्धारित होता है। प्रशासनिक समस्या और विकास से सम्बन्धित समस्या की सम्पूर्ण जानकारी के लिए सम्बन्धित प्रशासन के बाहरी परिवेश का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। जो प्रशासनिक संस्थाएं किसी एक देश में सफलतापूर्वक कार्य करती हैं उनहें दूसरे देशों में अपनाने के प्रयास किये जाते हैं। लेकिन उस प्रशासनिक व्यवस्था को दूसरे देश में अपनाये जाने के पूर्व दोनों के पर्यावरण का सूक्ष्म अध्ययन एवं विवेचन आवश्यक हो जाता हैं वातावरण सम्बन्धी तत्व न सिर्फ समाज में प्रभावशाली परिवर्तन लाते हैं बल्कि पर्यावरण सम्बन्धी तत्व प्रशासन और उसके विकास कार्यक्रमों को भी व्यापक रूप से प्रभावित करते है। आज औद्योगीकरण के कारण विकास के क्षेत्र में पर्यावरण का महत्व बढ़ गया है और विश्वभर में पर्यावरण की सर्वस्व चर्चा हो रही है और दूषित वातावरण को रोकने के लिए प्रयास किये जा रहे है। चूँकि विकास प्रशासन के द्वारा किया जाता है इसलिए प्रशासन और विकास की संक्षिप्त चर्चा की गयी है।

अर्थ

पर्यावरण की सुरक्षा, सुधार और संसाधनों का उपयोग विकास योजना और कार्यक्रमों की स्थापना के मार्गदर्शक सिद्धान्त रहे हैं। सचमुच, ऐसे कोई विकास कार्यक्रम और परियोजना नहीं हैं जिनका पर्यावरण पर प्रभाव न पड़ता हो। पर्यावरण के दो रूप है– प्राकृतिक और मानव–निर्मित। दोनों की मानव के कल्याण और मौलिक अधिकार उपयोग के लिए आवश्यक हैं। पर्यावरण अवधारण मनुष्य परिवेश निर्माण के समस्त अंगों की समग्रता हैं पर्यावरण सामाजिक, जीवविद्या, पदार्थ विज्ञान और रासायनिक कारकों का समस्त योग है, जो मानव परिवेश का निर्माण करता हैं इनमें से परिवेश का प्रत्येक अंग संसाधन का निर्माण करता है जिस पर मानव कल्याण और उसका अस्तित्व निर्भर करता है। पर्यावरण में मानव सम्बन्धित समस्त गतिविधियों का उपयोग किया जाता है, इसलिए 'पर्यावरण प्रशासन' की एक व्यवावहारिक और समझने योग्य परिभाषा करना कठिन है। यह किसी पर्यावरण प्रशासक के बूते की बात नहीं है कि वह पर्यावरण के प्रत्येक अंगों की जानकारी का पण्डित बन जाय। पर्यावरण प्रशासन का अर्थ है– ''मानवीय कार्यों की इस प्रकार व्यवस्था करना जिससे जैविक स्वास्थ्य, विविधता और पारिस्थिति सन्तुलन सुरक्षित बना रहे है।''

पर्यावरण सम्बन्धी समस्या

पर्यावरण समस्या एक जटिल रूप धारण करती जा रही है। यहां उन बिन्दुओं की ओर ध्यान आकर्शित करने का प्रयतन कर रहे हैं जो वातावरण को दूषित करने के लिए उत्तरदायी हैं।

1. जनसंख्या संकट– विश्व की जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है और हमारे पास सबको सबकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए पर्याप्त अनाज नहीं हैं जनसंख्या के विस्फोट के खतरे एशिया, अफ्रीका और लेटिन अमरीका के देशों में अधिक हैं, जिसके कारण कारण वहां सामान्य स्वास्थ्य सम्बन्धी और अन्य सामान्य सुविधाएं उपलब्ध नहीं है।

2. गरीबी– गरीबी पर्यावरण की एक भयप्रद समस्या है। पर्यावरण के साथ प्रदूषण की समस्या जुड़ी हुई है। गरीबी और आवश्यकता सबसे बड़े प्रदूशित करने वाले हैं। इसका आशय यह है कि यदि गरीबी को दूर कर दिया जाय तो प्रदूषण समस्या का समाधान हो सकता है। भूमि की उपजाऊ क्षमता को कम करते हैं। इससे भी गरीबी बढ़ रही है। अतः आवश्यकता है कि विकासशील देशों में गरीबी की समस्या का निदान कर विकास के लिए स्वस्थ वातावरण का निर्माण करें।

ऊर्जा–कमी और प्रदूषण

पर्यावरण की एक अन्य समस्या उचित ऊर्जा की कमी और प्रदूषण है। परम्परागत ऊर्जा के तरीकों के कारण प्रदूषण गरम हो जाता है, मौसम में परिवर्तन, गर्मी में तेजी, कार्बन डाइऑक्साइड और सल्फर डाइऑक्साइड के स्तर में वृद्धि होती है। इनके कारण प्रदूषण की समस्या उत्पन्न होती है और पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव है। आज रेडियो–सक्रिय परमाणवीय गन्दगी पर्यावरण के लिए एक नवीन चुनौती है। इस गम्भीर समस्या के समाधान के लिए एक नवीन ऊर्जा अवधारणा की आवश्यकता है जिसमें प्रदूषण से बचा जा सके तथा पर्यावरण की रखा की जा सके। इसके लिए 'ऊर्जा फार्म' और 'सौर्य ऊर्जा' जैसे नवीन तरीकों की खोज तथा प्रयोग करने की आवश्यकता है।

हथियारों की स्पर्द्धा

पर्यावरण को दूषित करने का एक कारण हथियारों की स्पर्द्धा है। विकसित देशों में हथियारों पर अरबों रूपये खर्च किये जाते हैं। 1990 में उन्होंने हथियारों पर एक महाशंख डालर (Trillon) खर्च किये। विकासशील देश भी अपने विकास कार्यों की अपेक्षा हथियारों की दौड़ में सम्मिलित हो गये।

ऋण–बोझ

ऋण का बोझ और व्यापार की प्रतिगामी शर्ते विश्व के प्रमुख प्रश्न बन गये हैं। ऋण की बोझ की समस्या विकासशील देशों में देखने को मिलती है। विकासशील देशों को अपने सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए पर्याप्त और उचित संसाधनों, विशेषकर विदेशी मुद्रा प्राप्त करने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। सिकुड़ते हुए कच्चे संसाधन पर्यावरण के लिए एक अन्य समस्या संधानों की कमी होना है। प्रकृति से हमें जो कच्चे संसाधन के रूप में मिलता है उसमें कमी होती जा रही है। इस दिशा में हमने पर्याप्त वृद्ध और भूमि खो दी है।

जल प्रदूषण

जल पर्यावरण का अभिन्न अंग है जिसके स्रोत वर्षा के अतिरिक्त नदी, तालाब, कुएँ झील आदि हैं। जनसंख्या वषद्धि, औद्योगीकरण और आधुनिकीकरण ने हमारे जल–स्रोतों को प्रदूषित तो किया ही है, जल का संकट भी उत्पन्न कर दिया है। यद्यपि भारत जल–सम्पादा के मामले में कुछ सम्पन्नतम राष्ट्रों में से एक है, फिर भी जल का संकट निरन्तर बढ़ता जा रहा है।

वायु प्रदूषण

वायु मण्डल पर्यावरण का महत्वपूर्ण भाग है। वायु के अभाव में मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। विकास के नाम पर मानव ने अपने औद्योगिक लाभ के लिए जिस अन्धाधुन्ध तरीके से प्राकृतिक साधनों को नष्ट किया है उसका परिणाम यह हुआ कि प्राकृतिक सन्तुलन बिगड़ने लगा है और वायुमण्डल भी इससे अछूता नहीं रह सका है।

ध्वनि प्रदूषण

ध्वनि का शोर पर्यावरण को सूक्ष्म तरीके से प्रदूषित करता है। इस प्रदूषण को केवल महसूस किया जा सकता है, देखा नही जा सकता है। वातावरण में फैली अदृश्य, अनिच्छित ध्वनि अथवा शोर को ध्वनि प्रदूषण कहा जाता है। आधुनिक युग में जिस गति से कारखानों एवं वाहनों आदि की संख्या में दिन–प्रतिदिन वृद्धि हुई है, उससे यन्त्रों का शोर व यातायात कोलाहल बढ़ा है। उत्सवों, मेलों, समारोहों में तेज ध्वनि के संगीत, वाद्य–यंत्र, लाउडस्पीकरों के प्रयोग तथा वायुयानों, रेलगाड़ियों और कारखानों की मशीनों आदि से सम्पूर्ण पर्यावरण में ध्वनि प्रदूषण की समस्या विकट हो गयी है।

परमाणु विखण्ड या नाभिकीय प्रदूषण

परमाणु ऊर्जा मानव द्वारा आविश्कृत सर्वाधिक शक्तिशाली ऊर्जा स्रोत है। जहां विकास कार्यों में इसका प्रयोग अत्यधिक लाभकारी है, वहीं विनाश हेतु इसका प्रयोग अत्यन्त भयावह हो सकता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जापान के शहरों हिरोशिमा व नागासाकी पर गिराये गये अणु बमों से भयानक तबाही आज भी अविस्मरणीय है। परमाणु ऊर्जा से चलने वाले कारखानों में छोटी–सी असावधानी भी बड़ी दुर्घटना का कारण बन सकती है, जैसे रूस के चेरनोबिल अणु बिजलीघर में विस्फोट काण्ड और मार्च 1963 में भारत में नरौरा ऊर्जा संयन्त्र में अग्निकाण्ड। इस प्रदूषण से जल, थल व वायु तीनों ही एक साथ दूषित होते हैं।

वन और पर्यावरण

वन–विनाश पर्यावरण सन्तुलन को बिगाड़ने का एक प्रमुख कारक है। वन पर्यावरण संरक्षण के महत्वपूर्ण अंग है। किन्तु आज उनका तीव्र गति से विनाश किया जा रहा है। वन ऐसे संधाधन हैं जो नवीकरण के योग्य हैं और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं। इनके विनाश के कारण व्यापक भू–कटाव, अनियमित वर्षा और अत्यधिक बाढ़ का आना है। इसके अतिरिक्त ईंधन–लकड़ी का अभाव उत्पन्न हो रहा है तथा भू–उत्पादकता में कमी आ रही है।

भारत में पर्यावरण समस्या

अन्य देशों की भांति, भारत के नागरिक भी पर्यावरण से सम्बन्धित अनेक प्रकार की समस्या कर रहे हैं जो उनके सामान्य जीवन को प्रभावित कर रहा है। विकसित देशों की पर्यावरण समस्या उनके संसाधन के दुरूपयोग जीवन–शैली की देन है, जबकि हमारी समस्या बढ़ती हुई जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संसाधनों पर बढ़ते दबाव का परिणाम है। भारत में बढ़ती हुई जनसंख्या न केवल पर्यावरण के लिए एक बड़ी चुनौती है अपितु मानव के अस्तित्व के लिए खतरा है।

भारत में पर्यावरण को दूषित करने के अनेक कारण हैं, जिनमें मुख्य निम्नलिखित है–

1. जल और भूमि की कमी,
2. प्रदूषण (वायु, जल, भूमि, खनिज, प्रकाश),
3. जंगली प्रदेश और जंगली जीवन की क्षति,
4. जनसंख्या और गरीबी,
5. आवास समस्या,
6. बढ़ता औद्योगीकरण, और
7. पर्यावरण के प्रति जागरूकता की कमी आदि।

पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में विकसित एवं सम्पन्न पश्चिमी राष्ट्रों में पर्यावरण संरक्षण के लिए कुछ समूहों का उदय हुआ। उस समय विश्व के सीमित क्षेत्रों में केवल कुछ ऐसे कानून एवं विधियां थीं जो प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा से सम्बनिधत थे। मूलतः वे जनसाधारण की चिन्ता का परिणाम न होकर शासकीय विशिष्ट वर्गों की सुविधा के लिए बनाये गये थे। पश्चिमी देशों में जिस आन्दोलन का जन्म हुआ वह प्राकृतिक संसाधनों के अति–प्रयोग और विनाश की चिन्ता के साथ–साथ एक दूरगामी और विशाल दृष्टिकोण का भी परिणाम था जो मानवता के लम्बे अस्तित्व और जीवन की गुणवत्ता पर केन्द्रित था।

सम्मेलन के दौरान विकसित और विकासशील देशों के बीच दृष्टिकोण की भिन्नता के बावजूद एक सकरात्मक परिणाम पर्यावरण के प्रति जागरूकता के विश्वजनीन प्रसार में हुआ और

साथ ही विकास, संसाधनों के प्रबन्ध और नियोजन के समय पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए कार्ययोजना का निर्माण हुआ। एक विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) की घोषणा हुई तथा संयुक्त राष्ट्र का पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) प्रारम्भ हुआ जिसके अन्तर्गत पर्यावरणीय प्रदूषण की रोकथाम के लिए अनेक आयोगों, संस्थानों और सम्मेलनों के माध्यम से विश्व पर्यावरण के बेहतर प्रबन्ध के लिए प्रयत्न प्रारम्भ किये गये।

भारत में सुधार के प्रयास

1972 में स्टाकहोम मानवीय पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के हस्ताक्षरकर्ता राष्ट्रों में से एक था और इस संकल्प का सहभागी कि मानवीय पर्यावरण का संरक्षण और सुधार सब राष्ट्रों का पवित्र कर्तव्य है। भारत का यह संकल्प चतुर्थ पंचवर्षीय योजना (1969–74) में पहली बार स्पष्ट रूप से कहा गया... यह हमारी पीढ़ी का कर्तव्य है कि वह भूमि, जल, आकाश और वन्य जीवन की उत्पादक क्षमता का इस प्रकार संभालकर उपयोग करे ताकि आने वाली पीढ़ियों को स्वस्थ पर्यावरण की रचना का अवसर मिल सके। सामंजस्यपूर्ण विकास के लिए योजना–कार्य व्यक्ति और प्रकृति की इस एकता को मान्यता देता है। ऐसा योजना–कार्य पर्यावरणीय मुद्दों के समग्र मूल्यांकन के आधार पर ही सम्भव है। ऐसे अनेक मामले हैं जिनके पर्यावरण सम्बन्धी पहलुओं पर ठीक समय पर उचित परामर्श से उनका से उनका बेहतर प्रारूप तैयार किया जा सकता है।

भारत विश्व के कुछ देशों में से एक है जहां संविधान में पर्यावरण की सुरक्षा और सुधार का उल्लेख किया गया है। संविधान के अनुच्छेद 48–ए, 51–ए में पर्यावरण से सम्बन्धित बातों का उल्लेख किया गया है। हमारे यहां समय–समय पर पर्यावरण से सम्बन्धित समस्याओं से निपटने के प्रयास होते हैं।

भारत में उपरोक्त प्रयासों के बावजूद पर्यावरण की समस्या बनी हुई है। इस दिशा में और प्रयासों की आवश्यकता है। लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है। साथ में जनता को शिक्षित करना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त जनसंख्या को रोकने के सार्थक प्रयास तथा अति औद्योगीकरण की दिशा में सोच–समझ कर निर्णय लेना। चूंकि यह समस्या मानवकृत है अतः हमें ही इसका समाधान ढूंढ़ना होगा।

संन्दर्भ

1. (1972). United Nationas: Development & Envionment. Pg. **7-8.**
2. अग्रवाल, अनिल., नारायण, सुनीता. (1988). हमारा पर्यावरण. गांधी शान्ति प्रतिष्ठानः दिल्ली. पृष्ठ **27.**
3. Ghadon, G.E. (1971). Dynamics of Public Administration. Reinhert: New York. Pg. **290-91.**
4. द्विवेदी, शिवनरायन. (1993). भारतीय धर्म और राजनीतिक सम्प्रदाय. दैनिक भास्करः ग्वालियर. 28 अगस्त. पृष्ठ **4.**
5. जैन, आर0के0. (1989). भारतीय समाज, अधिकारी–तन्त्र और प्रशासन।
6. चतुर्वेदी, टी0एन0. तुलनात्मक लोक–प्रशासन. रिसर्च प्रकाशन. सामाजिक विज्ञानः दिल्ली. पृष्ठ **21–22.**

7. कश्यप, सुभाष. (1972). भारतीय सांविधानिक विकास और स्वाधीनता संघर्ष. रिसर्च प्रकाशनः दिल्ली।
8. (1983). Second Report of the Independent Commission on International Development Issues. Common Crisis : north-South Co-operation for World Recovery London. Pan Books. Pg. **126.**
9. (1992). Qipted frp, tje Commonwealth Current. Aug.- Sept. Pg. **2.**
10. Arun, C. Vakil. (1984). Economic Aspects of Envionmental Pollution in India. Bombay. Pg. **98.**
11. अग्रवाल, अनिल., नारायण, सुनीता. (1968). हमारा पर्यावरण. गांधी शान्ति प्रतिष्ठानः दिल्ली. पृष्ठ **34.**
12. व्यास, हरिश्चन्द्र. (1989). जनसंख्या और पर्यावरण. विद्या विहारः नई दिल्ली. पृष्ठ **9—10.** एवं पटवा. पर्यावरण की संस्कृति बीकानेर. वाग्देवी प्रकाशन. पृष्ठ **18—19.**
13. Khosho, T.N. (1986). Environmental Priorities in India and Substainable Development. Presidential Address. 73rd Secession. Indian Science Congress Association: New Delhi.